

हलो गायूं वाधाई रघुवीर जी ।

मिली मालिक अयोध्या मीर जी ॥

अमां राणी अ जी गोद भरी आ बाबा दशरथ दिलिड़ी ठरी आ

उमड़ी सरिता हर्ष जे हीर जी ॥

भवानी शंकर दियनि वाधाई नचंदी कुदंदी शारदा आई

द्रिसो खुशिड़ी सुवन समीर जी ॥

सनकादिक रिषी डोड़ंदा आया नारद तम्बूरे गीतड़ा गाया

द्रिसो रोनक बाबल दर भीड़ जी ॥

भू मण्डल जो भागु भलो थियो साकेत नाथ जो दरसु पलइ पयो

हरी शोभा कौशल्या वीर जी ॥

प्रेम सुधा सां अमां मनु भरियो आ चुसिकयूं देई राम मुखु ठरियो आ

जै सुहागिणि अमड़ि सुख सीर जी ॥

गद गद अजु मैगसि महतारी द्रिसी ठरी बचड़नि जी बारी

जेका दुलारी दशरथ दिल धीर जी ॥